

सोम प्रदोष व्रत कथा

सोम प्रदोष व्रत की कथा अनुसार एक नगर में एक विधवा ब्राह्मणी रहती थी। उसका कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए वो सुबह होते ही अपने पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से जो कुछ मिलता था उसी से वो अपने और अपने पुत्र का पेट पालती थी। एक दिन ब्राह्मणी जब अपने घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में मिला। ब्राह्मणी को उस पर दया आ गई और वो उसे अपने घर ले आई। वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। उसके राज्य पर शत्रु सैनिकों ने आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था।

राजकुमार ब्राह्मणी और ब्राह्मण-पुत्र के साथ उनके घर रहने लगा। एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा, जो उस पर मोहित हो गई। अगले दिन अंशुमति के माता-पिता राजकुमार से मिलने आए। उन्हें भी राजकुमार पसंद आ गया। कुछ दिनों बाद अंशुमति के माता-पिता को भगवान शिव सपने में दिखाई दिए और उन्होंने उनको आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाए। उन्होंने वैसा ही किया।

ब्राह्मणी विधि विधान प्रदोष व्रत किया करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज की सेना की मदद से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ दिया और अपने पिता के राज्य को फिर से प्राप्त कर लिया। इसके बाद वो अपने परिवार सहित आनन्दपूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण-पुत्र को अपना मंत्री बनाया। ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के माहात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण-पुत्र के दिन फिरे, वैसे ही इस व्रत को करने से शंकर भगवान अपने सभी भक्तों के भी दिन फेरते हैं। बोलो हर हर महादेव !